***जय काली माता आरती***

*अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली |*

*तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ||*

*तेरे भक्त जनों पे माता, भीर पड़ी है भारी |*

*दानव दल पर टूट पडो माँ, करके सिंह सवारी ||*

*सौ सौ सिंहों से तु बलशाली, दस भुजाओं वाली |*

*दुखिंयों के दुखडें निवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ||*

*माँ बेटे का है इस जग में, बडा ही निर्मल नाता |*

*पूत कपूत सूने हैं पर, माता ना सुनी कुमाता ||*

*सब पर करुणा दरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली |*

*दुखियों के दुखडे निवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ||*

*नहीं मांगते धन और दौलत, न चाँदी न सोना |*

*हम तो मांगे माँ तेरे मन में, इक छोटा सा कोना ||*

*सबकी बिगडी बनाने वाली, लाज बचाने वाली |*

*सतियों के सत को संवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ||*

 *अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली |*

 *तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती*